हंस और कछुआ

Date 25.06.2021
Page 22

मगध देश में फुल्लोत्पल नामक एक ~~नद~~ तालाब था। उस में सकट और विकट नामक दो हंस मित्र रहते थे उनका एक कछुआ मित्र भी वहाँ रहता था। उस तालाब में मछलीयां भी रहती थी। एक बार वहाँ से कुछ मछुआरे गुजर रहे थे उनकी निगाह उस तालाब की तैर रही मछलियों पर पड़ी। मछुआरों की निगाह उस पर पड़ने के बाद उन्होंने आपस में विचार किया की वे अगले दिन आकर तालाब की सभी मछलीयों को और कछुए को पकड़ेंगे। सकट और विकट ने मछुआरों की बात करते हुए सुनलीया और तुरंत मछलीयों और कछुए को बतादीया कछुए को यह सुनकर बहुत डर लगा कछुए ने सकट

और विकट से निवेदन किया की वह वह दोनों उसे वहाँ से कही और ले जाए लेकीन संकट और विकट यह सोच रहे थे की वह कछु कछुए को वहाँ से लेंगे कैसे फिर उन दोनों ने उपाय सोचा उन्होंने एक लकड़ी लाया और कछुए से कहा कि वह इसे दोनों तरफ से अपनी मुँह मुँह से दबा लेंगे और कछुआ अपने मुँह से उस लकड़ी के बिच वाले हिस्से को पकड़ लेगा और कछु कछुए ने उनकी योजना को मान लिया। उन्होंने कछुए को मुँह खोलने के लिए मना किया। फिर वह तिनों उड़ पड़े। जब वह एक गाँव के उपर उपर से उड़ रहे थे तब कुछ बच्चों ने पतंग उडाते हुए देखा की। वे उनके पिछा पिछे पिछे भागने लगे और

एक लड़के ने वह देख कर ~~बोला~~ बोला - "देखो।
कैसा अद्भुत दृश्य है।" दूसरा लड़का बोला -
अगर यह कछुआ गिर पड़ा तो मैं इसे घर
ले जाकर पालूँगा।" तिसरा लकड़ा बोला "नहीं,
मैं तो इसे पकड़ लूँगा और कहीं जाने नहीं दूँगा।
सबकी बात सुनकर कछुए को गुस्सा आ रहा था।
उससे बोले बिना रहा नहीं जा रहा था। वह
अपना संयम खो बैठा और बोल ने लगा की -
"तुम क्या मुझे ~~।"~~ खाक पकड़ोगे।" यह
कहने के बाद वह ज़मीन पर गिर गया और
मर गया।